

“ममता कालिया के उपन्यासों में महिला, परिवार और लिंग संबंधों की पारस्परिक गतिशीलता: एक आलोचनात्मक अध्ययन”

शिशु सिंह

शोधार्थी, महाराजा सुहेलदेव विश्वविद्यालय, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश

डॉ० दीपिका दूबे

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग

श्री अग्रसेन महिला महाविद्यालय, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश

सार

सभ्य समाज और पारिवारिक संरचना के ताने-बाने में महिला का केंद्रीय स्थान है, दोनों ही भारतीय संस्कृति में गहराई से समाहित हैं। एक आधारभूत संस्था के रूप में परिवार न केवल सुरक्षा और भावनात्मक आधार प्रदान करता है, बल्कि सांस्कृतिक निरंतरता और समाजीकरण को भी बढ़ावा देता है। परिवार के भीतर ही व्यक्ति के नैतिक और नैतिक ढाँचे का निर्माण होता है, जो इसे व्यक्तित्व विकास और सामाजिक एकीकरण में एक महत्वपूर्ण एजेंट बनाता है। भारतीय समाज में, परिवार एक सांस्कृतिक संचारक और एक रचनात्मक स्थान दोनों के रूप में कार्य करता है, जहाँ व्यक्ति, विशेष रूप से महिलाएँ, अपनी भूमिकाओं, जिम्मेदारियों और पहचानों पर बातचीत करती हैं। ममता कालिया की कहानियाँ इन पारस्परिक गतिशीलता का एक सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत करती हैं – महिलाओं, परिवार के सदस्यों और व्यापक सामाजिक ढाँचे के बीच जटिल संबंधों को उजागर करती हैं। उनकी कहानियाँ इस बात की जाँच करती हैं कि महिलाएँ पारंपरिक अपेक्षाओं, भावनात्मक संघर्षों और सामाजिक मानदंडों को कैसे पार करती हैं, अक्सर उन्हें सूक्ष्म लेकिन शक्तिशाली तरीकों से चुनौती देती हैं या फिर से परिभाषित करती हैं। अपने पात्रों और कहानी कहने के माध्यम से, कालिया लैंगिक भूमिकाओं के बदलते प्रतिमानों, महिलाओं के भावनात्मक श्रम और परिवार और समाज की विकसित प्रकृति पर प्रकाश डालती हैं। वर्तमान अध्ययन इन अंतर्संबंधों की आलोचनात्मक रूप से पड़ताल करता है, जिसमें इस बात पर ध्यान केंद्रित किया गया है कि कालिया के साहित्यिक कार्यों में दर्शाए गए पारिवारिक और सामाजिक स्थानों के भीतर महिलाएँ अपनी पहचान करती हैं।

मुख्य शब्द: ममता कालिया, साहित्य में महिलाएँ, पारिवारिक गतिशीलता, पारस्परिक संबंध, भारतीय समाज, लैंगिक भूमिकाएँ, नारीवादी कथा साहित्य, सामाजिक पहचान, पितृसत्ता, भारतीय संस्कृति

परिचय

महिलाओं, परिवार और समाज के बीच जटिल संबंध लंबे समय से भारतीय साहित्य में एक केंद्रीय विषय रहे हैं, खासकर उन कथाओं में जो भारतीय जीवन की सामाजिक-सांस्कृतिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित और आलोचना करने का लक्ष्य रखते हैं। समकालीन भारतीय लेखकों में, ममता कालिया मध्यम वर्ग की भारतीय महिलाओं, उनकी घरेलू वास्तविकताओं, परिवार और समाज के भीतर उनके भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक संघर्षों के अपने साहसिक, ईमानदार और अक्सर व्यंग्यपूर्ण चित्रण के लिए जानी जाती हैं।

भारतीय संस्कृति में, परिवार को नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास की आधारशिला माना जाता है। यह न केवल एक घरेलू स्थान के रूप में कार्य करता है, बल्कि एक ऐसा स्थान है जहाँ सामाजिक मूल्य, लैंगिक भूमिकाएँ और व्यक्तिगत पहचान आकार लेती हैं और सुदृढ़ होती हैं। महिलाओं को, विशेष रूप से, अक्सर इस संस्था के केंद्र में रखा जाता है, जो एक साथ परंपरा को कायम रखती हैं और इसकी अपेक्षाओं का खामियाजा भुगतती हैं। ममता कालिया का उपन्यास इस गतिशीलता की आलोचनात्मक जांच करता है, और इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि कैसे महिलाएं न केवल देखभाल करने वालों और पालन-पोषण करने वालों के रूप में परिवार के साथ जुड़ती हैं, बल्कि निर्धारित भूमिकाओं से परे पहचान, स्वायत्तता और अर्थ की तलाश करने वाले व्यक्तियों के रूप में भी। कालिया के पात्र अक्सर शहरी और अर्ध-शहरी मध्यवर्गीय परिवेश में रहते हैं, जहां परंपरा और आधुनिकता के बीच तनाव स्पष्ट रूप से दिखाया गया है।

उनके नायक वैवाहिक कलह, लिंग पूर्वाग्रह, पीढ़ीगत संघर्ष, सामाजिक पाखंड और महिलाओं पर पड़ने वाले भावनात्मक बोझ जैसे मुद्दों का सामना करते हैं। सूक्ष्म विडंबना, यथार्थवादी संवाद और सूक्ष्म चरित्र चित्रण के माध्यम से कालिया परिवार को न केवल प्यार और अपनेपन के स्थान के रूप में प्रस्तुत करती हैं, बल्कि भावनात्मक बंधन, समझौता और मौन प्रतिरोध के स्थान के रूप में भी प्रस्तुत करती हैं। यह अध्ययन आलोचनात्मक रूप से पता लगाता है कि ममता कालिया महिलाओं, परिवार और समाज के बीच पारस्परिक संबंधों को कैसे चित्रित करती हैं उनके उपन्यासों की जांच करके, इस शोध का उद्देश्य उन तरीकों को उजागर करना है जिनसे पारिवारिक परिवेश में लैंगिक शक्ति गतिशीलता संचालित होती है और महिलाएं सामाजिक अपेक्षाओं के सामने अपनी उपस्थिति और व्यक्तित्व पर जोर कैसे देती हैं।

उद्देश्य

1. ममता कालिया के उपन्यासों में महिलाओं, परिवार और समाज के बीच पारस्परिक संबंधों के चित्रण की आलोचनात्मक जांच करना।
2. यह विश्लेषण करना कि ममता कालिया की महिला पात्र पितृसत्तात्मक परिवार और सामाजिक संरचनाओं के भीतर पहचान, स्वायत्तता और प्रतिरोध के बीच कैसे समझौता करती हैं।

ममता कालिया के साहित्य में स्त्री की पारिवारिक स्थिति

ममता कालिया द्विभाषी लेखिका हैं, जो हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखती हैं। अपने साहित्य में वे मुख्य रूप से प्रेम, विवाह, सामाजिक और पारिवारिक संबंधों तथा आधुनिक समाज में मानवीय मूल्यों के पतन जैसे विषयों पर लिखती हैं। वे अपने साहित्य के माध्यम से एक संवेदनशील और बौद्धिक स्त्री

की अपने माता-पिता, परिवार, घरेलू और व्यावसायिक जीवन तथा व्यापक बाहरी सामाजिक जीवन के संबंध में दुर्दशा को दर्शाती हैं। वे प्रेम और विवाह की मानसिक कुंठाओं और मजबूरियों को भी स्पष्ट करती हैं।

उनका साहित्य घर के अंदर और बाहर स्त्री के जीवन की कुंठाओं, विवाहित जीवन की ऊब और समाज में मूल्यों की अराजकता से संबंधित है। एक भारतीय महिला लेखिका के रूप में वे पारंपरिक भारतीय समाज में अपनी पहचान के प्रति सजग हैं और महिलाओं के उत्पीड़न के खिलाफ बड़े जोश और भागीदारी के साथ अपनी आवाज उठाती हैं। उनका साहित्य विषय-वस्तु के मामले में बहुत हद तक आत्मकथात्मक है, क्योंकि उनके शुरुआती जीवन में एक दबंग पिता के साथ, उनके पति और उनके परिवार के साथ एक प्रेमहीन रिश्ता और उनके पेशेवर जीवन में अपमान ने उनके गुस्से और दमनकारी पितृसत्ता के खिलाफ विद्रोह की भावना को विकसित किया, जिसके तहत उन्हें पीड़ित और पराजित किया गया। इसलिए उनके साहित्य में भारतीय पितृसत्तात्मक परंपरा में महिलाओं की पीड़ा को दर्शाया गया है, जो काफी हद तक पुरुष संस्कृति के तहत अधीनता और बंधन के कारण है।

उनका साहित्य महिलाओं के हित के लिए लड़ने की विद्रोही इच्छा को दर्शाता है और भेदभावपूर्ण मूल्यों, पाखंडों और पूर्वाग्रही नियमों से मुक्त दुनिया की मांग करता है। वह समकालीन दुनिया में महिलाओं की पहचान की स्थापना के लिए भी संघर्ष करती हैं। ममता कालिया कोई उग्र, नारीवादी कार्यकर्ता नहीं हैं। फिर भी उनकी कविता महिलाओं की समान जीवन की मांगों के मूल प्रस्ताव के साथ एक महत्वपूर्ण चिंता साझा करती है। उनमें न केवल व्यक्तित्व के लिए जुनून है, बल्कि पितृसत्तात्मक उत्पीड़न और अन्य सीमाओं से मुक्ति के लिए नारीवादी एजेंडे का भी समर्थन करती है। कविता में ममता कालिया एक आधुनिक, स्पष्टवादी, जागरूक महिला का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने पिता और उनके मूल्यों के खिलाफ सवाल उठाने, न्याय करने और यहां तक कि विद्रोह करने का साहस रखती है। वह पारंपरिक मूल्यों और मान्यताओं में बदलाव चाहती है और दमनकारी पितृसत्तात्मक मूल्यों और कानूनों के खिलाफ बोलने के लिए काफी साहसी है।

कविता का शीर्षक बहुत ही विडंबनापूर्ण है क्योंकि कविता पितृसत्तात्मक मूल्यों और आदर्शों को थोपने को खारिज करती है। ममता कालिया एक ही समय में दिए गए सामाजिक व्यवस्था से असंतुष्ट और निराश दिखती हैं। इसलिए उनकी कविताओं में इस समाज को बदलने की एक चीख और आंतरिक इच्छा है, जो उन्हें नहीं दी जाती है, इसलिए वे हैरान और चकित रह जाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी कविताओं में सिज़ोफ्रेनिक व्यवहार होता है। ममता कालिया एक ऐसी कहानीकार हैं जिनकी प्रतिभा को सभी लेखक पहचानते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में भारतीय संदर्भ में परिवार में महिलाओं की दूसरी स्थिति को बहुत ही संवेदनशील तरीके से चित्रित किया है।

ममता कालिया ने अपनी रचनाओं में दिखाया है कि दोगले दर्जे की होने के कारण परिवार और समाज में महिलाओं का अक्सर शोषण किया जाता रहा है। समाज में महिलाएं इसका उदाहरण हैं, महिलाओं की पुरुषों पर निर्भरता और समाज में उनकी अधीनता का कारण उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति है। इस समाज में, चाहे वह संयुक्त परिवार हो या एकल परिवार, पुरुष ने हमेशा महिला को एक संपत्ति के रूप में माना है। एक पुरुष का एक महिला के शरीर और मन पर एक निर्बाध अधिकार है, वह उसे अपनी इच्छानुसार नियंत्रित करना चाहता है। वास्तव में, हमारे समाज का मूल ढांचा ऐसा है कि

महिलाओं का हर जगह शोषण होता है। परिवार के बाहर सीधे तौर पर, परिवार में यह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में होता है। अधिकांश महिलाएं परिवार के बाहर सुरक्षित होने पर भी आहत और अपमानित महसूस करती हैं या हुई हैं। पुरुष वर्ग एक आदर्श महिला के चरित्र को सामने रखकर या कोई अन्य ठोस उदाहरण देकर उसे अपने नियमों के अनुसार जीने के लिए मजबूर करता है, वह चाहकर भी अपनी आवाज नहीं उठा पाती और वह पुरुष के किले में रहती है, ऐसे ही रहती है।

ममता कालिया की 'राजू' कहानी में एक विधवा बेटी परिवार में उपेक्षित है क्योंकि वह एक गरीब और विधवा महिला है। भाई की शादी में जाने पर बहन व अन्य रिश्तेदार तरह-तरह की बातें करते हैं। उसे व उसके बेटे को अपशगुन कहकर अपमानित किया जाता है। 'बेघर' में परमजीत की मां का किरदार बताता है कि बार-बार प्रसव होने से उसका शरीर बुरी तरह प्रभावित हुआ है। एक महिला को अन्य जिम्मेदारियों के साथ-साथ मातृत्व का दायित्व भी निभाना पड़ता है। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण महिलाओं का सर्वांगीण विकास संभव नहीं हो पाता। उसे मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना पड़ता है। भारतीय महिलाएं अपने विकास व अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं हैं।

ज्यादातर घरेलू कामों तक ही सीमित रहकर अपने जीवन का आनंद लेने में अपनी सफलता समझती हैं। उनके परिवार में लड़कियों की शादी हमेशा तनाव का विषय रही और तीन-चार साल छोटी बहन को भी भाई से ज्यादा विवाह योग्य मान लिया जाता था। भारतीय समाज में महिलाओं की उपेक्षा हमेशा से होती रही है। संयुक्त परिवार में उपेक्षा इतनी ज्यादा हो जाती है कि अविवाहित लड़कियों की कोई परवाह नहीं करता। ममता कालिया का मानना है कि हमारे समाज में पारिवारिक माहौल की संरचना ऐसी है कि महिलाएं पढ़ाई के लिए हतोत्साहित होती हैं।

ममता कालिया की चुनिंदा रचनाओं में स्त्री-पुरुष संबंध

ममता कालिया की रचनाओं में 20वीं सदी की शहरी मध्यवर्गीय भारतीय महिलाओं की पीड़ा झलकती है। उन्होंने हिंदी साहित्य में अपने साहसिक और पथप्रदर्शक काम के लिए कई पुरस्कार और प्रशंसाएं जीती हैं। उन्हें आधुनिक महिलाओं की संवेदनाओं, पुरुष-महिला संबंधों और उत्तर-आधुनिक भारत में महिलाओं के अस्तित्व के संघर्ष से जुड़े मुद्दों को उठाने के लिए जाना जाता है, खासकर पितृसत्तात्मक व्यवस्था में। उनकी कविताओं और उपन्यासों में, एक आम सूत्र विवाह के बाद एक महिला का परिवर्तन है। कालिया के अनुसार, विवाह का मतलब है चुप्पी, भेदभाव और ज्यादातर बिना किसी सहारे के समस्याओं से जूझना। श्रुति सिंह के साथ एक साक्षात्कार में, उन्होंने कहा कि "एक महिला का जीवन बहुत कठिन है", खासकर आधुनिक महिलाओं के लिए, जहाँ उनके लिए बहुत सारी जिम्मेदारियाँ हैं।" कालिया, जो खुद एक विवाहित महिला हैं, भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक व्यवस्था से घृणा व्यक्त करती हैं जो अपनी गिरफ्त में आने वाली युवा महिलाओं का दम घोटने और उन्हें अपने अधीन करने के अलावा कुछ नहीं करती। आशा विश्वास के शब्दों में: "कई समकालीन महिलाएँ... विवाह और दैनिक जीवन में निजी उत्पीड़न का अनुभव करती हैं। जबकि विवाह पुरुषों की भावनात्मक सेवा है, 'दैनिकता' महिलाओं की ऊर्जा को नियंत्रित करने का एक तरीका है। महिला कवियों ने पहचाना है कि विवाह की संस्था को मर्दाना या स्त्री संबंधों के अनुसार कैसे कोडित किया जाता है, महिलाओं को निष्कासित या उपेक्षित करके कैसे प्रवचन कार्य करते हैं। जबकि पति विषय है, पितृसत्तात्मक व्यवस्था में कार्य करने के लिए एक 'मैं' है, पत्नी को निष्क्रियता और निष्क्रिय कामुकता के गुणों को प्राप्त करना पड़ता है। कवि

का विवाह से मोहभंग उनकी कई कविताओं में प्रकट होता है। जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण है "आठ साल की शादी के बाद।" कविता में, अपने दो बेटों के साथ शादी के बाद अपने माता-पिता के घर जाने वाली महिला को एक विवाहित महिला के रूप में अपनी खुशी के बारे में एक साधारण सवाल का जवाब देना कठिन लगता

लेकिन एक भारतीय विवाहित महिला होने के नाते उसे एहसास है कि सिर्फ उसके बच्चों की ही नहीं बल्कि उसके बूढ़े माता-पिता की भी खुशी उस पर निर्भर है। वह रोना चाहती है, विद्रोह करना चाहती है और अपने गुस्से और दर्द को व्यक्त करना चाहती है, लेकिन अपने नज़दीकी लोगों को चोट पहुँचाने के डर से ऐसा नहीं कर पाती। अपने भीतर कैद रहना ही उसकी नियति लगती है। खुद को चोट पहुँचाने के इरादे से "रात भर बिस्तर पर रोना" एक गहरी निराशा और पीड़ा की भावना को दर्शाता है, साथ ही यह भी संकेत देता है कि उसे सांत्वना देने वाला कोई नहीं था। पति की छवि गायब है और उसे इस दर्द और उसके परिणामस्वरूप कम आत्मसम्मान के अपराधी के रूप में कल्पना करना आसान है। ममता कालिया अपनी कविताओं और लघु कथाओं में जो प्रकट करती हैं, वह विवाहित महिलाओं की एक पूरी तरह से विदेशी आंतरिक दुनिया है, जिसमें बहुत कम लोग प्रवेश कर पाते हैं या पहुँच पाते हैं। उस दुनिया में, एक महिला अपने दुख में पूरी तरह से अकेली होती है, दर्द, विद्रोह, क्रोध और यहाँ तक कि नफ़रत को अपने दिल की सीमाओं के भीतर रखती है। भारतीय महिलाओं के लिए, यह उनकी खुद की बनाई हुई 'लक्ष्मण रेखा' है। वे समझती हैं कि रेखा पार करने का मतलब न केवल उनके लिए बल्कि उनके प्रियजनों के लिए और अधिक त्रासदी और पीड़ा है और इसलिए उनसे विकल्प छीन लिए जाते हैं। कविता की अंतिम पंक्ति बहुत खूबसूरती से इसका सार प्रस्तुत करती है:

“तो मैंने सब कुछ निगल लिया, और बड़ी संतुष्टि के साथ मुस्कुराया।”

कालिया की कुछ कहानियों में भी शादी के बाद औरत की दयनीय स्थिति को थीम के तौर पर दिखाया गया है। 'रायवाली' कहानी नायिका कालिंदी के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसने शादी के बाद न सिर्फ अपना नाम खो दिया है, बल्कि अपनी पहचान भी खो दी है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में वह घर की नौकरानी से ज़्यादा कुछ नहीं है, जबकि उसका पति, उसका मालिक बनकर न सिर्फ उसके साथ बुरा व्यवहार करता है, बल्कि विवाहेतर संबंध भी बनाता है। क्रूरता की पराकाष्ठा तब होती है, जब अपनी मां की मौत के बाद उसे अपने माता-पिता के घर जाने की इजाज़त नहीं होती, क्योंकि वह अपने देवर की शादी में घर के कामों से मुक्त नहीं हो पाती। जब वह अपनी बात कहने की कोशिश करती है, तो उसका पति उसे घर से निकाल देने की धमकी देता है और वह हार मान लेती है।

नवनीता देव सेन के शब्दों में: “एक भारतीय महिला के लिए, शर्म की भावना परम मूल्यों में से एक है। उसे चलना, बोलना, देखना, मुस्कुराना, खाना पीना, हँसना और रोना सभी कुछ संयमित तरीके से, संयमित तरीके से करना चाहिए...उसे शिक्षा और जानकारी से वंचित करके उसके मानसिक स्थान को सीमित कर दिया जाता है।” ममता कालिया की कहानी द वोकल वूमन में, नायिका शिखा से जब उसका पूरा नाम दीपशिखा पूछा जाता है, तो वह घोषणा करती है कि - “मेरे माता-पिता ने मुझे गलत नाम दिया है, मैं न तो आत्म-विस्मृति वाला दीपक हूँ और न ही कम जलती हुई ज्योति। मैं एक धधकती हुई लौ हूँ! मैं अग्निशिखा हूँ।”

लेकिन वही लड़की जो यह साहसिक घोषणा करती है और अपनी प्रतिभा से अपने पति कपिल को आकर्षित करती है, उसे पता चलता है कि विवाहित होने का मतलब है “सहमति का जीवन” शिखा इन गृहणियों के लिए चिंतित, तिरस्कार और थोड़ी शर्म महसूस करती है और अंततः स्वीकार करती है कि इन महिलाओं में बदलने की कोई इच्छा नहीं है क्योंकि वे “आराम” और “गिरफ्तारी” के खेल को नहीं समझती हैं।

शिखा के जीवन में “धूल झाड़ना, सफाई करना और पोछा लगाना

एक “कलम, कागज और किताब” की जरूरत से टकराता है।

ममता कालिया की नायिका विद्रोह करती है और अपने आस-पास के लोगों को चुप रहने की सजा देने का फैसला करती है लेकिन लंबे समय तक ऐसा नहीं कर सकती। उसके पति और सास की इच्छा कि उनके घर में एक ऐसी महिला हो जो उसके साथ किए गए व्यवहार को चुपचाप स्वीकार कर ले, उसे शौचालय की तरह “टॉकलट्स” की इच्छा होती है जहां “आप अपना रोष व्यक्त करते हैं, अपने शब्दों को फलश कर देते हैं और साफ और शांत होकर बाहर आते हैं।”

दो बच्चों और कई सालों के विवाहित जीवन के बाद, शिखा का अपने पति के बारे में नज़रिया, जिसे वह ‘अनोखा’ समझती थी, अचानक बदल जाता है जब उसे एहसास होता है कि “वह एक ऐसी गांधारी पत्नी चाहता था जो अंधी होने के साथ-साथ बहरी और गूंगी भी हो।”

अपने अस्तित्व की निरर्थकता का अंतिम अहसास तब होता है जब उसका बेटा उसे बहुत मारता है और कोई उसका साथ नहीं देता। शिखा के विवाहित जीवन के ज़रिए ममता कालिया ने पूरी पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर उंगली उठाई है जो चुपचाप और क्रूरता से एक महिला की आवाज़ को ‘बंद’ करने और उसके व्यक्तित्व को कुचलने का काम करती है। लेकिन आधुनिक महिला इस साजिश को समझती है और कालिया की महिलाएँ चुप रह सकती हैं लेकिन वे हार नहीं मानतीं। कहानी में शिखा जानती है कि “फ़िलहाल उसका मुँह बंद है लेकिन यह चुप्पी नहीं है। उसके शब्द लड़ाई को आगे बढ़ाएंगे।”

वैसे तो ममता कालिया ने रवींद्र कालिया से प्रेम विवाह किया था और यह एक उदार रिश्ता था, लेकिन उनके संस्मरण रवि कथा में बहुत कुछ अनकहा रह गया है और कई बार ऐसा लगता है कि अनकहा, कहे गए से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण हो सकता है। एक तरफ़, हमारे पास दो उल्लेखनीय लेखिकाएँ हैं जो लगभग समान शर्तों पर एक साथ रह रही हैं, वहीं दूसरी तरफ़, हमारे पास ममता कालिया हैं जो अपने जीवन भर तीन मोर्चों पर काम करती रहीं – उनकी नौकरी, घर और एक लेखिका के रूप में उनका पेशा। उन्हें कभी भी सिर्फ़ लेखिका होने का सुख नहीं मिला और न ही ऐसा लगता है कि उनके पास अपनी कोई जगह थी।

लिंग के आधार पर यह अंतर कालिया के व्यक्तित्व का एक हिस्सा है क्योंकि वह उन सभी महिलाओं के लिए एक हथियार बन जाती हैं जो विवाह व्यवस्था में शोषित महसूस करती हैं। जहाँ पुरुष अराजकता से दूर जाकर सृजन करता है, वहीं महिला अराजकता के बीच सृजन करती है। गंगा में कूदकर जान देने की इच्छा क्षणिक हो सकती है लेकिन फिर भी यह आंतरिक संघर्ष और पीड़ा का

संकेत है जो हर महिला के अस्तित्व का हिस्सा है, जो पितृसत्तात्मक व्यवस्था में फंसी हुई है। रानू उनियाल बताती हैं: की वे न केवल कामकाजी महिला के संघर्ष और बेचैनी की बात करती हैं, बल्कि वह उस दुनिया में निहित चुनौतियों और तनावों को भी सामने लाती हैं, जो मुखरता की बेचैनी और अस्वीकृति के दर्द से भरी हुई है। एक बेटी के रूप में भी कालिया की नायिका अपने पिता के खिलाफ विद्रोह करती है और उनके द्वारा स्थापित पुरुष मॉडल को अस्वीकार करती है।

वह अपने पिता को 'अस्वीकार' करने और उन्हें उनके नाम से पुकारने के बारे में भी सोचती है। एक महिला जो बेटी है और वह पुरुष जो पिता है, के बीच बुनियादी टकराव अंतिम पंक्तियों में देखा जाता है - "आपके बारे में सब कुछ मेरे बारे में लगभग हर चीज से टकराता है... क्या होगा अगर मेरा पेट धीरे-धीरे दिखने लगे और मैं इसका इलाज कराने से इनकार कर दूँ।"

कालिया की महिलाएं अक्सर ढांचे को पूरी तरह तोड़ने में विश्वास नहीं करती हैं लेकिन वे शब्दों का उपयोग करके और इसके आदर्शों के पाखंड के लिए अपनी अवमानना को कठोरता से व्यक्त करके पितृसत्ता की दीवार में एक महत्वपूर्ण संधि लगाती हैं। बेटी का अपने पिता को आश्वासन पितृसत्ता के लिए एक तमाचा है: "लेकिन मैं सावधान रहूंगी, पापा, वरना मुझे पता है कि आप आत्महत्या के बारे में सोचेंगे।"

अनीता देसाई के उपन्यासों पर राधा चक्रवर्ती की टिप्पणी कालिया के उपन्यासों पर भी सटीक बैठती है, जैसा कि वे लिखती हैं - "नायक... अक्सर 'वर्तमान से लड़ने' का प्रयास करते हैं, केवल स्वतंत्रता और जिम्मेदारी के बीच जटिल संबंधों को खोजने के लिए।" (चक्रवर्ती, 66) एक पारंपरिक पत्नी और माँ बनना कालिया की नायिकाओं के लिए स्वाभाविक नहीं है और वह उन्हें मातृ भूमिकाओं में फिट करने की कोशिश नहीं करती हैं। 'सपनों की होम डिलीवरी' की नायिका अपने पति और बेटे को अपना जीवन बनाने के लिए छोड़ देती है। वह उनमें से किसी के द्वारा भावनात्मक रूप से ब्लैकमेल होने से इनकार करती है और अपने लिए एक सफल करियर बनाती है। अपने तीखे, व्यंग्यपूर्ण संवादों, एक महिला की मानसिकता के संवेदनशील चित्रण और भारत में मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थवादी वर्णन के लिए जानी जाने वाली ममता कालिया एक ऐसी लेखिका हैं जो परिभाषा को चुनौती देती हैं। वह लगभग हर उस चीज़ के बारे में लिखती हैं जो जीवित और जीवन से धड़कती है ममता कालिया की महिलाएँ महत्वाकांक्षी, विनम्र, समझौतावादी, साहसी, मौन और मुखर हैं। वे चुप रह सकती हैं, लेकिन आत्मसमर्पण नहीं करतीं। उनकी चुप्पी कभी-कभी वास्तविक भाषण से ज़्यादा मुखर होती है। उनकी कहानियाँ भारतीय सामाजिक संरचना में विसंगतियों की खोज करती हैं और पाठक को भावनाओं और संवेदनाओं के प्रवाह में ले जाती हैं। उनकी कविताएँ एक महिला के सामने आने वाली विभिन्न स्थितियों पर तीखी टिप्पणी करती हैं, खासकर शादी के बाद। "शीर गुड लक" कविता में, वह विडंबनापूर्ण ढंग से लिखती हैं;

“मेरे साथ कभी कुछ नहीं हुआ, सिवाय दो बच्चों और दो गर्भपात के

कविता “मजबूरी” में, मुख्य पात्र एक महिला के लिए निर्धारित शारीरिक मापदंडों के खिलाफ विद्रोह करता है, जहाँ उसे सुंदर दिखना होता है:

“मैं अपने सभी सौंदर्य प्रसाधन फेंक देना चाहती हूँ, मैं अपनी असली उम्र बताना चाहती हूँ।”

कविता “रॉबर्ट फ्रॉस्ट के खिलाफ” में कालिया मध्यम वर्ग की पाखंडी वास्तविकता और पुरुषों की शराब और सेक्स के लिए स्वार्थी लालसा पर कड़ा प्रहार है:

“मैंने कई महीनों से एक सेब भी नहीं देखा है, हम जो भी बचाते हैं, उसे बीयर और गर्भनिरोधक के लिए रखते हैं।”

ममता कालिया स्त्री-पुरुष संबंधों के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करती हैं और अपनी महिलाओं को उनके साथ हुए अन्याय के खिलाफ विरोध और विद्रोह करने के लिए प्रेरित करती हैं। एक लेखिका के रूप में उन्हें एहसास है कि “लिंग अंततः बड़े वैश्विक और स्थानीय मुद्दों के नेटवर्क के संदर्भ में ही सार्थक है।” इसलिए वह अपनी नायिकाओं को विभिन्न स्थितियों में रखती हैं जहाँ वे व्यवस्था के बाहर से नहीं बल्कि उसके भीतर से लड़ती हैं। पितृसत्ता के खिलाफ उनका संघर्ष स्वतंत्रता, समानता और आत्म-सम्मान के लिए एक व्यक्ति के संघर्ष का एक सार्वभौमिक उदाहरण बन जाता है।

निष्कर्ष

ममता कालिया की कहानियाँ समकालीन भारतीय जीवन में महिलाओं, परिवार और समाज के बीच संबंधों के जटिल जाल का यथार्थवादी और आलोचनात्मक चित्रण प्रस्तुत करती हैं। पुरुष-महिला संबंधों के लेंस के माध्यम से, उनकी कहानियाँ वैवाहिक और पारिवारिक संबंधों को नियंत्रित करने वाली गहरी जड़ें जमाए हुए पितृसत्ता को उजागर करती हैं, जहाँ महिलाएँ अक्सर खुद को पत्नी, बेटी या माँ के रूप में पारंपरिक भूमिकाओं तक ही सीमित पाती हैं। हालाँकि, कालिया की महिला नायक केवल पीड़ित नहीं हैं; वे अपनी भावनात्मक और बौद्धिक एजेंसी का दावा करते हुए इन मानदंडों को चुनौती देती हैं और सवाल उठाती हैं। साथ ही, महिलाओं की पारिवारिक स्थिति की उनकी खोज परिवार इकाई को बनाए रखने में महिलाओं की केंद्रीय लेकिन अक्सर अनदेखी की गई भूमिका को रेखांकित करती है, साथ ही उनके द्वारा सहन किए जाने वाले भावनात्मक श्रम और सामाजिक दबावों को भी उजागर करती है। परिवार एक पोषण और सीमित करने वाली जगह के रूप में उभरता है - जहाँ महिलाओं की पहचान को आकार दिया जाता है, परखा जाता है और कभी-कभी फिर से परिभाषित किया जाता है। संक्षेप में, ममता कालिया का उपन्यास महिलाओं, परिवार और समाज के बीच विकसित हो रहे पारस्परिक गतिशीलता को आलोचनात्मक रूप से प्रतिबिंबित करता है, तथा महिलाओं के संघर्षों और सूक्ष्म प्रतिरोधों को चित्रित करता है, क्योंकि वे अपेक्षाओं, दायित्वों और बदलते सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा संरचित दुनिया में आगे बढ़ती हैं।

संदर्भ

- [1] अराना, आर विक्टोरिया. द फैक्ट्स ऑन फाइल कम्पैनियन टू वर्ल्ड पोएट्री: 1900 टू प्रेजेंट. न्यूयॉर्क: इन्फोबेस पब्लिशिंग, 2008.
- [2] बजाज, रेशमी. महिला इंडो-एंग्लियन कवि: एक आलोचना. नई दिल्ली: एशियाई, 1996.

- [3] भट्टाचार्य, राजलक्ष्मी देबी. “इंडो-इंग्लिश महिला कवियों की एक नई पीढ़ी.” पोएट्री क्रॉनिकल, 3, 5-6, 1991.
- [4] दास, कमला. द ओल्ड प्लेहाउस एंड अदर पोएम्स. बॉम्बे: ओरिएंट लॉन्गमैन लिमिटेड. 1973.
- [5] डे-ब्यूवॉयर, सिमोन. द सेकेंड सेक्स. अनुवादक: एच एम पार्शले. न्यूयॉर्क: पेंगुइन बुक्स, 1984.
- [6] डी-सूजा, यूनिस, संपादक. नौ भारतीय महिला कवि. नई दिल्ली: ओयूपी, 1997.
- [7] उपता, तनु. समकालीन भारतीय महिला कवियों की चयनित रचनाओं में सिज़ोफ्रेनिया का अनुभव. डिस. पंजाब विश्वविद्यालय, 2010. [//www.shodhganga.inflibnet.ac.in/](http://www.shodhganga.inflibnet.ac.in/)
- [8] कालिया, ममता. पापा को श्रद्धांजलि और अन्य कविताएँ. कलकत्ता (भारत): कलकत्ता राइटर्स वर्कशॉप, 1970. (संक्षिप्त रूप में टीटीपीओपी)
- [9] किंग, ब्रूस. “नई महिला कवियाँ.” आधुनिक भारतीय कविता अंग्रेजी में. नई दिल्ली: ओयूपी, 2001:312-332.
- [10] पटनायक, गंगा लक्ष्मी. “ममता कालिया और सिज़ोफ्रेनिया.” मई 2009 [//www.rockpebbles.in/](http://www.rockpebbles.in/)
- [11] प्लाथ, सिल्विया. सिल्विया प्लाथ: संग्रहित कविताएँ. एड. टेड ह्यूजेस. क्वीन स्कॉयर (लंदन): फेबर एंड फेबर लिमिटेड 1981
- [12] चक्रवर्ती, राधा. नारीवाद और समकालीन महिला लेखिकाएँ: व्यक्तिपरकता पर पुनर्विचार.
- [13] यूनिस डी सूजा, और यूनिस. नौ भारतीय महिला कवि. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1997.
- [14] कालिया, ममता. पापा को श्रद्धांजलि और अन्य कविताएँ. कलकत्ता: राइटर्स वर्कशॉप, 1970. पोएम्स 78. कलकत्ता: राइटर्स वर्कशॉप, 1978.
- [15] कालिया, ममता, "द वोकल वुमन" एड. भारत तिवारी शब्दांकन, 6 अगस्त, 2021. <http://www.shabdankan.com>
- [16] सिंह, श्रुति, “ममता कालिया की कविताओं में पहचान की तलाश। द क्राइटेरियन, अंक 12,
- [17] फरवरी 2013. <http://www.the-criterion.com>. accessed 25|11|22
- [18] सेन, नवनीता देव, “सदी के मोड़ पर भारत में महिला लेखन।” संपादक जसबीर जैन